

महासागरीय धाराएँ

प्रलमिस के लयि:

[लहरें](#), [जवार-भाटा](#), [महासागरीय धाराएँ](#), [कोरओलसि परभाव](#), [अंटार्कटकि परधिरुवीय धारा \(ACC\)](#), [मानसून](#), [गल्फ सट्रीम](#), [कुरोशयिो धारा](#), [अगुलहास धारा](#), [हदि महासागर](#) ।

मेन्स के लयि:

महासागरीय धारा, प्रकार, वशिषताएँ, गठन, जलवायु पर परभाव, मत्स्य पालन और नेवगिशन, प्रमुख महासागरीय धाराएँ ।

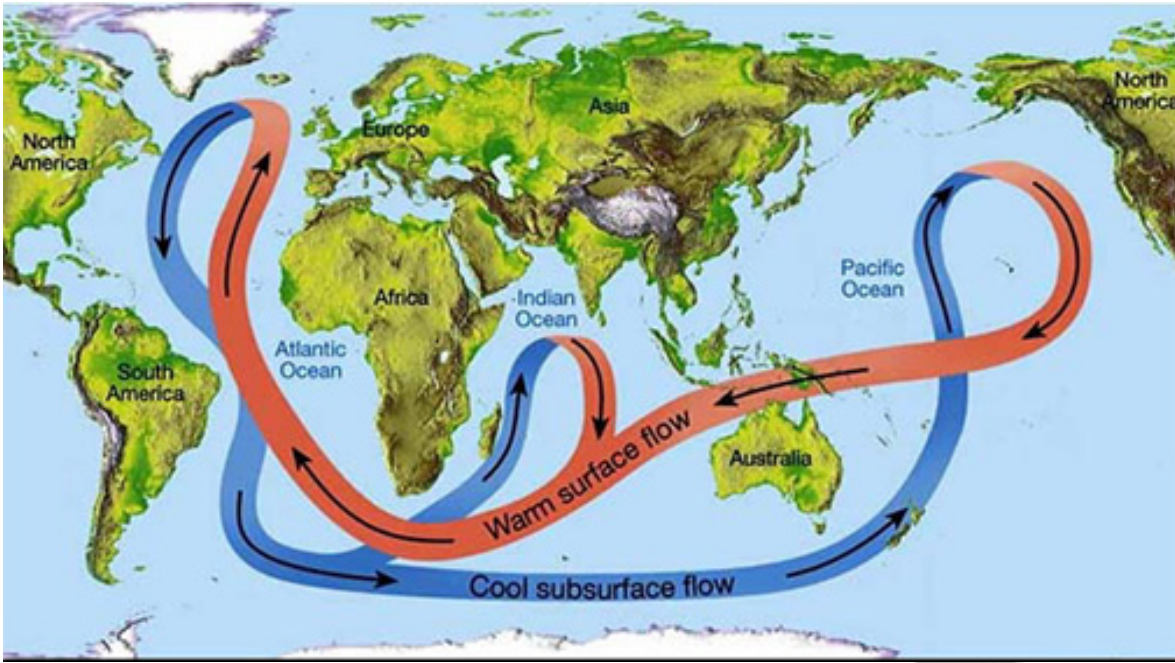
महासागरीय धाराएँ क्या हैं?

परचिय:

- महासागरीय जल की गति निरंतर होती है और इसे तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: [लहरें](#), [जवार-भाटा](#) और [महासागरीय धाराएँ](#) ।
- महासागरीय धाराएँ सागरीय जल की [नरितर](#), [पूर्वानुमानति](#), [दशिात्मक गति](#) हैं । यह सागरीय जल की विशाल गति है जो वभिन्न बलों के कारण और उनसे प्रभावति होती है ।
- वे समुद्र में बहने वाली नदियों के समान हैं ।
- महासागर का जल दो दशिाओं में बहता है: [क्षैतजि](#) और [ऊर्ध्वाधर](#) ।
 - क्षैतजि गति को [धारा](#) कहा जाता है , जबकि ऊर्ध्वाधर परिवर्तनों को [अपवेलगि](#) या [डाउनवेलगि](#) कहा जाता है ।

महासागरीय धाराओं के प्रकार:

- [गहराई के आधार पर](#):
 - [सतही धाराएँ](#): ये धाराएँ, मुख्य रूप से [सौर ऊर्जा](#) से संचालति [वैश्वकि पवन प्रणालयिों](#) द्वारा संचालति होती हैं, जो महासागर के ऊपरी 400 मीटर में होती हैं तथा महासागर के कुल जल का लगभग **10%** होती हैं ।
 - उषण कटबिंधीय क्षेत्त्रों से ध्रुवों की ओर गर्म जल ले जाकर, सतही धाराएँ स्थानीय और वैश्वकि जलवायु को नियंत्रति करने में महत्त्वपूर्ण भूमकि नभित्ती हैं ।
 - उदाहरण के लयि: [गल्फ सट्रीम \(अटलांटकि महासागर\)](#), [कुरोशयिो धारा \(प्रशांत महासागर\)](#), [अगुलहास धारा \(हदि महासागर\)](#) ।
 - [गहरे जल की धाराएँ](#): शेष **90%** महासागरीय जल तापमान और लवणता भन्निताओं के कारण जल घनत्व में परिवर्तन से प्रभावति होता है, जसि [थर्मोहैलाइन सर्कुलेशन](#) के रूप में जाना जाता है ।
 - ये धाराएँ तब उत्पन्न होती हैं जब घना, ठंडा जल गहरे महासागरीय बेसिनों में अवक्षेपति हो जाता है, वशिष रूप से उच्च अक्षांश क्षेत्त्रों में, जसिसे वैश्वकि "[कनवेयर बेल्ट](#)" का निर्माण होता है ।
 - सतही और गहन धाराओं की यह विशाल, परस्पर संबद्ध प्रणाली हज़ारों वर्षों से विश्व के महासागरों में प्रवाहति होती रही है, जो [जलवायु स्थिरता](#) और महासागर में [कार्बन डाइऑक्साइड](#) और [पोषक तत्त्वों](#) के चक्र को प्रभावति करती रही है ।
 - उदाहरण के लयि: [उत्तरी अटलांटकि गहरा जल \(NADW\)](#), [अंटार्कटकि बॉटम जल \(AABW\)](#) ।



■ तापमान के आधार पर:

- **ठंडी धाराएँ:** ठंडी धाराएँ ठंडे जल को गर्म क्षेत्रों में ले जाती हैं।
 - वे आमतौर पर नमिन से मध्य अक्षांशों पर महाद्वीपों के पश्चिमी तटरेखाओं के साथ तथा उच्च अक्षांशों पर पूर्वी तटरेखाओं के साथ पाई जाती हैं।
 - ये धाराएँ तटीय क्षेत्रों में तापमान को न्यंत्रित रखने में मदद करती हैं और पोषक तत्वों को ऊपर उठाने में योगदान देती हैं, जिससे महासागरीय जीवन को समर्थन मिलता है।
 - उदाहरण के लिये: **क्युराइल या ओयाशियो धारा (उत्तरी प्रशांत महासागर)**, **कैलिफोर्निया धारा (प्रशांत महासागर)**।
- **गर्म धाराएँ:** ये धाराएँ गर्म जल को ठंडे क्षेत्रों में ले जाती हैं और आमतौर पर नचिले और मध्य अक्षांशों में महाद्वीपों के पूर्वी तटरेखाओं के साथ-साथ उच्च अक्षांशों पर उत्तरी गोलार्द्ध में पश्चिमी तटरेखाओं के साथ पाई जाती हैं।
 - गर्म धाराएँ तटीय जलवायु को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप प्रायः मौसम की स्थिति सामान्य हो जाती है।
 - उदाहरण के लिये: **गल्फ स्ट्रीम (उत्तरी अटलांटिक महासागर)**, **एंटीलीज धारा (उत्तरी अटलांटिक महासागर)**।

महासागरीय धाराओं की उत्पत्ति के लिये उत्तरदायी कारक क्या हैं?

- महासागरीय धाराएँ प्राथमिक और द्वितीयक शक्तियों के संयोजन से प्रभावित होती हैं। ये शक्तियाँ महासागरीय जल की गति को आरंभ, निर्देशित और संशोधित करती हैं, वैश्विक जलवायु को आकार देती हैं और महासागरीय पारस्थितिकी तंत्र को सहारा देती हैं।

प्राथमिक बल:

■ सूर्यातप

- सूर्यातप से गर्म होने के कारण जल का वसितार होता है, जिससे भूमध्य रेखा के पास समुद्र का सतह मध्य अक्षांशों की तुलना में लगभग 8 सेमी अधिक हो जाता है। इससे एक सामान्य प्रवणता बनती है, जिससे जल पूर्व से पश्चिम की ओर धीरे-धीरे बहता है।

■ वायु (वायुमंडलीय परसिंचरण)

- महासागरों की सतह पर बहने वाली पवनें घर्षण बल लगाती हैं, जिससे जल पवनों की दिशा में बहता है। पवनें महासागरीय धाराओं की शक्ति और दिशा दोनों को प्रभावित करती हैं, जो आगे चलकर कोरओलिस प्रभाव से प्रभावित होती हैं।
 - उदाहरण के लिये, मानसूनी पवनें हिंद महासागर में मौसमी धाराओं को व्युत्क्रमित कर देती हैं।
- महासागरीय परसिंचरण प्रत्यक्ष प्रायः वायुमंडलीय परसिंचरण को प्रतबिंबित करते हैं, जिसमें प्रतचिक्रवाती (उच्च दबाव) प्रणालियाँ सामान्यतः मध्य अक्षांशों में व्याप्त होती हैं, जबकि चिक्रवाती (नमिन दबाव) प्रणालियाँ उच्च अक्षांशों में अधिक सामान्य होती हैं।
- मानसूनी पवनओं से प्रभावित क्षेत्रों में, जैसे कि उत्तरी हिंद महासागर में, पवन के प्रत्यक्ष के साथ धारा की दिशा मौसमी रूप से बदलती रहती है।

■ गुरुत्वाकर्षण:

- गुरुत्वाकर्षण जल को नीचे की ओर खींचता है, जिससे प्रवणता प्रभावित होती है और महासागरीय धारा प्रवाह में विधिता आती है।

■ कोरओलिस बल:

- पृथ्वी के घूर्णन के कारण उत्पन्न होने वाले कोरओलिस प्रभाव के कारण बहता जल उत्तरी गोलार्द्ध में दाईं ओर तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में बाईं ओर विक्रिपित हो जाता है।
- इसके परिणामस्वरूप बड़ी वृत्ताकार धाराएँ बनती हैं जिन्हें गाइरे के नाम से जाना जाता है।

- उदाहरण के लिये, उत्तरी अटलांटिक महासागर में **सारगैसो सागर**।
- **सारगैसो सागर** अटलांटिक महासागर में एक क्षेत्र है जो चार धाराओं से घिरा है, जो पवन की गति और कोरओलिस प्रभाव द्वारा संचालित एक वृत्ताकार महासागरीय चक्र का निर्माण करता है, जो परिसंचरण प्रारूप को निर्धारित करता है।

द्वितीयक बल:

- **जल में लवणता में भिन्नता:**
 - **तापमान और लवणता** दोनों से प्रभावित जल घनत्व में भिन्नताएँ, सागरीय धाराओं की ऊर्ध्वाधर गतिको संचालित करती हैं।
 - **उच्च लवणता के परिणामस्वरूप जल अधिक सघन होता है**, और इसी तरह, ठंडा जल गर्म जल की तुलना में अधिक सघन होता है। इस अंतर के कारण सघन जल क्षेपित हो जाता है, जबकि वरिल जल ऊपर उठता है, जिससे **नरितर ऊर्ध्वाधर परिसंचरण बनता है**।
- **जल का तापमान अंतर:**
 - **ध्रुवीय क्षेत्रों** में, ठंडा, घना जल क्षेपित हो जाता है और धीरे-धीरे **भूमध्य रेखा** की ओर बढ़ता है, जिससे महासागरीय तल पर **ठंडे जल की धाराएँ** बनती हैं।
 - इसके विपरीत, **गर्म जल की धाराएँ भूमध्य रेखा पर उत्पन्न होती हैं**, जहाँ गर्म जल **सतह के साथ ध्रुवों की ओर बहता है** और डूबते हुए ठंडे जल की जगह लेता है।
 - यह आदान-प्रदान एक **वैश्विक "कन्वेयर बेल्ट"** बनाता है जो **ऊष्मा का पुनर्वितरण** करता है, जलवायु प्रारूप को प्रभावित करता है, तथा महासागरीय पारस्थितिकी तंत्र में तापमान संतुलन बनाए रखता है।

महासागरीय धाराओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

- **कोरओलिस प्रभाव और धाराओं की सामान्य गति:**
 - महासागरीय धाराओं की सामान्य गति **उत्तरी गोलार्ध में दक्षिणावर्त दिशा** में और **दक्षिणी गोलार्ध में वामावर्त दिशा** में होती है, जो **मुख्य रूप से कोरओलिस बल** के कारण होती है। यह प्रारूप **फेरेल के नियम** के अनुरूप है।
 - एक महत्वपूर्ण अपवाद **हिंद महासागर** है, जहाँ मानसूनी पवनों के कारण धाराओं की दिशा मौसमी रूप से बदल जाती है।
- **गर्म और ठंडी धाराओं की गति:**
 - गर्म धाराएँ आमतौर पर ठंडे क्षेत्रों की ओर बहती हैं, जबकि ठंडी धाराएँ गर्म महासागरों की ओर बहती हैं।
 - नमिन अक्षांशों में, महाद्वीपों के पूर्वी तटों पर गर्म धाराएँ बहती हैं, और पश्चिमी तटों पर ठंडी धाराएँ बहती हैं। उच्च अक्षांशों में यह प्रारूप व्युत्क्रमित हो जाता है, जहाँ पश्चिमी तटों पर गर्म धाराएँ और पूर्वी तटों पर ठंडी धाराएँ बहती हैं।
- **अभिसरण और वचिलन:**
 - अभिसरण तब होता है जब **गर्म और ठंडी धाराएँ मिलती हैं**, जिससे प्रायः **मिश्रण होता है और पोषक तत्व ऊपर आते हैं**, जो सागरीय जीवन का आधार हैं।
 - वचिलन तब होता है जब एक **एकल धारा** विभिन्न दिशाओं में बहने वाली **अनेक धाराओं में विभाजित हो जाती है**, जिससे विशाल महासागरीय क्षेत्रों में ऊष्मा और पोषक तत्वों का वितरण सुगम हो जाता है।
- **तटीय प्रभाव:**
 - महासागरीय तटीय रेखाओं का आकार और स्थिति महासागरीय धाराओं की दिशा और गतिको महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। तटीय स्थलाकृत धाराओं को निर्देशित कर सकती है, जिससे उनके प्रवाह प्रारूप पर असर पड़ता है।
- **भूमिगत धाराएँ:**
 - महासागरीय धाराएँ केवल सतह तक ही सीमित नहीं रहतीं, बल्कि लवणता और तापमान में अंतर के कारण जल के नीचे भी उत्पन्न होती हैं।
 - उदाहरण के लिये, **भूमध्य सागर** का सघन, खारा जल नीचे गिरता है और **जब्राल्टर जलडमरूमध्य** से होकर एक भूमिगत धारा के रूप में बहता है।

क्षेत्रीय जलवायु, मत्स्य पालन और नौवहन पर महासागरीय धाराओं का क्या प्रभाव है?

- **रेगसिस्तान निर्माण:**
 - ठंडी महासागरीय धाराओं का **रेगसिस्तान** निर्माण पर सीधा प्रभाव पड़ता है, विशेष रूप से **उष्णकटबंधीय और उपोष्णकटबंधीय महाद्वीपों के पश्चिमी तटों पर**।
 - ये धाराएँ **पवनों को ठंडा** कर देती हैं, जिससे **नमी कम** हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप **शुष्क परस्थितियाँ और कोहरायुक्त मौसम** उत्पन्न होता है।
 - उदाहरण के लिये, पेरू के तट पर बहने वाली **ठंडी हम्बोल्ट धारा**, **अटाकामा रेगसिस्तान** के निर्माण में योगदान देती है, जो पृथ्वी पर सबसे शुष्क स्थानों में से एक है।
- **वर्षा प्रारूप पर प्रभाव:**
 - गर्म महासागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों और कभी-कभी आंतरिक क्षेत्रों में भी वर्षा लाने के लिये ज़िम्मेदार होती हैं।
 - उष्णकटबंधीय और उपोष्णकटबंधीय अक्षांशों में, गर्म धाराएँ महाद्वीपों के **पूर्वी तटों के समानांतर बहती हैं**, जो विशेष रूप से फ्लोरिडा और नेटाल जैसे क्षेत्रों में गर्म और बरसाती जलवायु में योगदान करती हैं।
 - **उपोष्णकटबंधीय प्रतचक्रवातों** के पश्चिमी किनारे पर स्थिति इन क्षेत्रों में, विशेष रूप से गर्मियों के महीनों के दौरान, अधिक वर्षा होती है।
- **तटीय तापमान पर मध्यम प्रभाव:**
 - सागरीय धाराएँ तटीय क्षेत्रों में तापमान को मध्यम रखने में मदद करती हैं। उदाहरण के लिये **उत्तरी अटलांटिक बहाव पश्चिमी यूरोप**,

खासकर ब्रिटिश द्वीपों (उत्तरी अटलांटिक महासागर में द्वीपों का एक समूह) में गर्मी लाता है, जिससे अत्यधिक ठंडी सर्दियाँ नहीं पड़ती।

- अफ्रीका के पश्चिमी तट पर बहने वाली ठंडी धारा, कनारी धारा, स्पेन, पुर्तगाल और आसपास के क्षेत्रों पर शीतलन प्रभाव डालती है, जिससे तापमान में कमी आती है और क्षेत्रीय जलवायु प्रभावित होती है।

■ मछली पकड़ने के आधार:

- **ठंडी और गर्म समुद्री धाराओं के मशिरण** से विश्व में मछली पकड़ने के कुछ सबसे समृद्ध क्षेत्र बनते हैं। ये क्षेत्र पोषक तत्वों और प्लवक से समृद्ध हैं, जो मछलियों के लिये प्राथमिक भोजन स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।
 - उदाहरणों में कनाडा के **न्यूफाउंडलैंड के पास ग्रैंड बैंक्स और जापान का उत्तरपूर्वी तट** शामिल हैं, जो दोनों ही अपने प्रचुर सागरीय जीवन के लिये प्रसिद्ध हैं।
- **महासागरीय धाराओं की गति और मशिरण** ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाने तथा प्लवक की वृद्धि को बढ़ावा देने में मदद करते हैं, जिससे ये क्षेत्र मछली पकड़ने के लिये अनुकूल बन जाते हैं।

■ बूँदाबाँदी और कोहरे का निर्माण:

- गर्म और ठंडी महासागरीय धाराओं के मिलने से अक्सर कोहरे के मौसम बनता है, जहाँ हल्की बूँदाबाँदी के रूप में वर्षा होती है। यह घटना विशेष रूप से न्यूफाउंडलैंड जैसे क्षेत्रों में ध्यान देने योग्य है, जहाँ **लैब्राडोर धारा (ठंडी) गल्फ स्ट्रीम (गर्म)** से मिलती है जिसके परिणामस्वरूप कोहरा होता है जो इन क्षेत्रों में **नेवगिशन और मौसम के प्रतारूप को प्रभावित** करता है।

■ उष्णकटबंधीय चक्रवात:

- **गर्म महासागरीय धाराएँ उष्णकटबंधीय चक्रवातों** के निर्माण और तीव्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये धाराएँ उष्णकटबंधीय क्षेत्रों में गर्म जल जमा करती हैं, जो चक्रवाती तूफानों के विकास के लिये आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती हैं। **हदि महासागर और अटलांटिक महासागर** इन प्रक्रियाओं से विशेष रूप से प्रभावित होते हैं।

■ नेवगिशन पर प्रभाव:

- **सागरीय धाराएँ जहाजों के मार्ग को प्रभावित** करके सागरीय नौवहन में सहायता करती हैं। **उत्तरी भूमध्यरेखीय बहाव** जैसी धाराएँ पश्चिमी की ओर यात्रा करने वाले जहाजों की सहायता करती हैं, जैसा कि मैक्सिको से फ्लिपींस जाने वाले जहाज के मामले में होता है।
- इसके विपरीत जब जहाजों को पूर्व की ओर यात्रा करने की आवश्यकता होती है, जैसे कि फ्लिपींस से मैक्सिको तक, तो **भूमध्यरेखीय धाराओं का लाभ** उठा सकते हैं।
- सागरीय धाराओं की दिशा और गति सहित उनकी गहन समझ, सागरीय नौवहन मार्गों को अनुकूलित करने तथा वैश्विक व्यापार में ईंधन दक्षता को बढ़ाने के लिये महत्वपूर्ण है।

प्रमुख महासागरीय धाराएँ क्या हैं?

■ भूमध्यरेखीय धारा प्रणाली:

- **उत्तरी और दक्षिणी भूमध्यरेखीय धाराएँ:** ये **आर्कटिक** को छोड़कर सभी प्रमुख महासागरों में मौजूद हैं। ये प्रचलित व्यापारिक पवनओं द्वारा संचालित होकर पूर्व से पश्चिमी की ओर बहती हैं।
- **भूमध्यरेखीय प्रतारिधारा:** ये उत्तरी और दक्षिणी भूमध्यरेखीय धाराओं के बीच स्थिति होती हैं, यह भूमध्यरेखीय धाराओं की दिशा के विपरीत पश्चिमी से पूर्व की ओर बहती हैं। यह धारा भूमध्यरेखीय जल प्रवाह को संतुलित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

■ अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा (ACC):

- ACC एक महासागरीय धारा है जो अंटार्कटिका के चारों ओर पश्चिमी से पूर्व की ओर दक्षिणावर्त बहती है। ACC का एक वैकल्पिक नाम वेस्ट वंडि ड्रिफ्ट है।

■ हम्बोल्ट या पेरूवियन धारा:

- इस **कम लवणता वाली धारा का** सागरीय पारस्थितिकी तंत्र बहुत बड़ा है तथा यह विश्व की प्रमुख पोषक प्रणालियों में से एक है।
 - यह नदी चिली के सुदूर दक्षिणी सरि से दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ उत्तरी पेरू तक बहती है।

■ कुरील या ओयाशियो धारा:

- यह उप-आर्कटिक महासागरीय धारा वामावर्त दिशा में प्रचलित है।
- यह आर्कटिक महासागर से निकलती है जो पश्चिमी उत्तरी प्रशांत महासागर में **बेरिंग सागर** के माध्यम से दक्षिण में बहती है।
- यह **पोषक तत्वों से भरपूर धारा है।**
- यह उत्तरी प्रशांत बहाव बनाने के लिये जापानी पूर्वी तट से **कुरियोशियो** से टकराता है।

■ कैलिफोर्निया की धारा:

- यह उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ दक्षिण की ओर बहने वाली **अलेउतियन धारा** का वस्तितार है।
- यह **उत्तरी प्रशांत घूर्णन (North Pacific Gyre)** का एक हिस्सा है।
- यह एक मजबूत अपवेलगि का क्षेत्र है।

■ लैब्राडोर की धारा:

- यह **आर्कटिक महासागर** से दक्षिण की ओर बहती है और उत्तरी की ओर बढ़ती हुई गल्फ स्ट्रीम से मिलती है।
- कोल्ड लैब्राडोर करंट और वार्म गल्फ स्ट्रीम का संयोजन मछली पकड़ने हेतु दुनिया का सबसे बड़ा क्षेत्र माना जाता है।

■ कनारी: यह फ्रैम स्ट्रेट और केप फेयरवेल के बीच फैली एक कम लवणता वाली धारा है।

- यह आर्कटिक को सीधे उत्तरी अटलांटिक से जोड़ती है।
- यह आर्कटिक के लिये मीठे जल का एक प्रमुख स्रोत है।
- आर्कटिक से **समुद्री-बर्फ के नरियात** में इसका प्रमुख योगदान है।

■ बेंगुला की धारा:

- यह दक्षिणी गोलार्द्ध की **पश्चिमी पवन प्रवाह** की एक शाखा है।
- यह दक्षिण अटलांटिक महासागर गाइरे के पूर्वी भाग में बहती है।
- इसमें लवणता कम है, अपवेलगि की उपस्थिति है और मछली पकड़ने के लिये यह उत्कृष्ट क्षेत्र है।

■ फाकलैंड की धारा:

- यह **अंटार्कटिक परिध्रुवीय धारा** की एक शाखा है।
- इसे **माल्विनिस धारा** के नाम से भी जाना जाता है।

- इसका नाम फाकलैंड द्वीप समूह के नाम पर रखा गया है।
- ठंडी जलधारा है। इसमें ब्राजील धारा आकर मलि जाती है।
- **पूर्वोत्तर मानसून धारा:** भारतीय उत्तर भूमध्यरेखीय धारा भूमध्य रेखा को पार करते हुए दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम की ओर बहती है।
- **सोमाली धारा:** यह अटलांटिक महासागर में गल्फ स्ट्रीम के समरूप है।
 - धारा मानसून से काफी प्रभावति होती है।
 - यह प्रमुख अपवेलगि प्रणालियों का कषेत्र है।
- **पश्चिमी ऑस्ट्रेलियाई जलधारा:** इसे पश्चिमी पवन बहाव के नाम से भी जाना जाता है।
 - यह अंटार्कटिक परधिरुवीय धारा का एक हसिसा है।
 - यह एक मौसमी धारा है जो गर्मियों में प्रबल तथा सर्दियों में कमजोर होती है।
- **कुरोशियो:** इस पश्चिमी सीमावर्ती धारा को **जापान धारा या काली धारा** भी कहा जाता है। जापानी भाषा में "कुरोशियो" शब्द का अर्थ "काली धारा" है।
 - यह अटलांटिक महासागर में गल्फ स्ट्रीम का प्रशांत समकक्ष है।
 - इस धारा की सतह का औसत तापमान आसपास के महासागर की तुलना में अधिक गर्म है।
 - इससे जापान के तापमान को नरिंतरति करने में भी मदद मलिती है, जो अपेक्षाकृत अधिक गर्म है।
- **उत्तरी प्रशांत धारा:** यह **कुरियोशियो और ओयाशियो** के टकराव से बनती है।
 - यह पश्चिमी उत्तर प्रशांत महासागर के कनारे वामावर्त दशा में परचालति होता है।
- **अलासका धारा:** यह उत्तरी प्रशांत महासागर के एक हसिसे के उत्तर की ओर मुड़ने के परणामस्वरूप बनती है।
- **पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई धारा:** यह दक्षिण-पूर्वी ऑस्ट्रेलियाई तट के साथ उपोष्णकटबिधीय कषेत्रों में उष्णकटबिधीय सागरीय जीवों को उनके आवासों तक ले जाने का कार्य करती है।
- **फ्लोरडा धारा:** यह फ्लोरडा प्रायद्वीप के चारों ओर बहती है तथा केप हेटेरस पर गल्फ स्ट्रीम में मलिती है।
- **गल्फ स्ट्रीम:** यह एक पश्चिमी तेज धारा है जो मुख्य रूप से वायु दबाव द्वारा संचालति होती है।
 - यह उत्तरी अटलांटिक बहाव (उत्तरी यूरोप और दक्षिणी धारा को पार करते हुए) तथा कनारी धारा (पश्चिम अफ्रीका का पुनर्चकरण) में वभाजति हो जाता है।
- **नॉर्वेजियन धारा:** यह वेज (wedge) के आकार का धारा जल के दो प्रमुख आर्कटिक अंतरवाहों में से एक है।
 - यह उत्तरी अटलांटिक बहाव की एक शाखा है और कभी-कभी इसे गल्फ स्ट्रीम का वसितार भी माना जाता है।
- **ब्राजीलियन धारा :** यह ब्राजील के दक्षिणी तट के साथ रथिो डी ला प्लाटा तक बहती है।
 - यह अर्जेंटीना सागर में ठंडे फाकलैंड करंट में शामिल हो जाती है, जसिसे यहाँ समशीतोष्ण समुद्र की स्थिति बनती है।
- **मोजाम्बिक धारा:** यह मोजाम्बिक चैनल में अफ्रीकी पूर्वी तट के साथ मोजाम्बिक और मेडागास्कर द्वीप के बीच बहती है।
- **अगुलहास धारा:** यह सबसे बड़ी पश्चिमी बाउंडरी महासागरीय धारा है।
 - यह नदी अफ्रीका के पूर्वी तट के साथ दक्षिण की ओर बहती है।
- **दक्षिण-पश्चिम मानसून धारा:** यह दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम (जून-अक्टूबर) के दौरान हृदि महासागर पर हावी होती है।
 - यह पूर्व की ओर बहने वाली एक व्यापक महासागरीय धारा है जो अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में फैली हुई है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????????

प्रश्न. वषुिवतीय प्रतधाराओं (इक्केटोरियल काउंटर-करंट) के पूर्वाभमुख प्रवाह की व्याख्या कसिसे होती है? (2015)

- (a) पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूरणन
- (b) दो वषुिवतीय धाराओं का अभसिरण (कन्वर्जेस)
- (c) जल की लवणता में अंतर
- (d) वषुिवत्-वृत्त के पास प्रशांतमण्डल मेखला (बेल्टऑफ काम) का होना

उत्तर: (b)

????????

प्रश्न. महासागर धाराएँ और जल राशयिँ सागरीय जीवन और तटीय पर्यावरण पर अपने प्रभावों में कसि-कसि प्रकार परस्पर भन्नि होते हैं? उपयुक्त उदाहरण दीजयि। (2019)

प्रश्न. महासागरीय धाराओं की उत्पत्तिके उत्तरदायी कारकों को स्पष्ट कीजयि। वे प्रादेशिक जलवायुओं, सागरीय जीवन तथा नौचालन को कसि प्रकार प्रभावति करती हैं? (2015)

